जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ-341306, राजस्थान
www.jvbi.ac.in

जैव-प्रबोधन : जैन दृष्टि

प्रो. बच्छराज दूगड़

जैव-प्रबोधन : जैन दृष्टि
प्रो. बच्छराज दूगड़

प्रकाशक :
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ-341306, राजस्थान

लेखक : प्रो. बच्छराज दूगड़

© जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

ISBN : 978-93-83634-31-6

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 140/-

मुद्रक : नागर प्रिंटिंग प्रेस, कोटा, राजस्थान

प्राक्कथन

हम उस पर्यावरण में रहते हैं जो हमारे लिए अनुकूल है। हम एक विशेष पर्यावरण में रह सकते हैं। पाषाण युग के लोग जिस पर्यावरण में रहते थे, शारीरिक दृष्टि से कोई विशेष अन्तर न होने पर भी हम उस पर्यावरण में रहने की नहीं सोच सकते। हम केवल पृथ्वी पर रह सकते हैं, गुरू, शुक्र, आदि दूसरे ग्रहों में नहीं रह सकते। इन दोनों स्थानों में अस्तित्व और अन-अस्तित्व की स्थितियां भिन्न-भिन्न हैं, फिर भी वे पर्यावरण का हिस्सा हैं।

हमारी प्रथम आवश्यकता हमारा अस्तित्व है। यदि हमारा अस्तित्व ही नहीं तो अन्य सारी समस्याएँ स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। हमें हमारे अस्तित्व के लिए श्वास-प्रश्वास हेतु ऑक्सीजन, पीने के लिए स्वच्छ पानी व खाने के लिए भोजन चाहिए। इसलिए हमें एक ऐसा पर्यावरण चाहिए, जो हमें ऑक्सीजन युक्त हवा, पानी व ऐसा भोजन दे, जिसका पाचन हम आसानी से कर सकें। यदि ये चीजें प्रदूषित हों अथवा न हों तो हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।

पर्यावरण संरक्षण कई घटकों पर निर्भर करता है, जिसमें से एक घटक है–अध्यात्म। अध्यात्म–जो हमें सही ढ़ंग से मार्गदर्शित कर ऐसी आदतें विकसित करने में सहयोग करता है, जिससे पर्यावरण का संरक्षण संभव हो सके। सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमारे रहने के तरीकों में पर्यावरणीय परिवर्तन हुआ है, हमारी इच्छाएँ बढ़ी हैं तथा आदतें बदली हैं। यह परिवर्तन विकास का अंग तो है, लेकिन इस विकास के साथ प्रकृति, संस्कृति एवं अध्यात्म का विकास भी आवश्यक है। वन एवं प्राकृतिक जीवन मानव जीवन को एक निश्चित दिशा देते थे। मानव प्राकृतिक जीवन